इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

पूर्वी क्षेत्रीय केंद्र, वाराणसी

कलातत्वकोष की विषय-वस्तु

कलातत्वकोष भारतीय कला के मौलिक अवधारणाओं का एक शब्दकोश है। प्रख्यात विद्वानों के परामर्श से कई विषयों और कला के लिए लाभदायक प्राथमिक ग्रंथों में उपयोग होने वाली लगभग 250 शब्दों की एक सूची तैयार की गई। प्रत्येक अवधारणा की एक व्यापक प्रकृति के साथ मुख्य अर्थ वाले शब्द का चयन करने के लिए कई विषयों की प्राथमिक ग्रंथों के माध्यम से जांच की गई है, फिर भी अलग अलग अर्थ विकसित हुए है। इस प्रकार के संकलन, विश्लेषण और पुन:कोडांतरण के जरिए भारतीय परंपरा की आंतरिक समग्र प्रकृति और इसकी आवश्यक अंतःविषय दृष्टिकोण का पुनः निर्माण करना संभव है।

कलातत्वकोष खंड I, *व्याप्ति*

आठ मूलभूत शब्दों से युक्त कलातत्वकोष का खंड-I, 1988 में प्रकाशित हुआ था। इस प्रारंभिक खंड में बेत्तिना बौमेर, प्रेम लता शर्मा, एच.एन. चक्रवर्ती, के.डी. त्रिपाठी और आर.एन. मिश्रा के सहयोग से प्रमुख आठ लेख जैसे- *ब्रह्म* (पूर्ण), *पुरुष* (आदमी), *आत्मा* (सब का सार), *शरीर* (देह), *प्राण* (जीवन सांस), *बीज* (जन्म), *लक्षण चिह्न))* और *शिल्प* (कला और शिल्प) शामिल हैं।

उसी का संशोधित संस्करण 2001 में प्रकाशमान है।

कलातत्वकोष खंड II, *देश-काल*

इसी श्रृंखला का खंड-II समय और स्थान से संबंधित सोलह शब्दों के साथ 1992 में प्रकाशित किया गया। इस कार्य में 16 शब्द जैसे- *बिंदू* (बूंद), *नाभि* (मध्य), *चक्र* (पहिया), *क्षेत्र* (अंतरिक्ष), *लोक* (उपस्थिति की दुनिया), *देश* (क्षेत्र), *काल* (समय), *क्षण* (पल), *कर्म* (उत्तराधिकार), *संधि* (मिलाप), *सूत्र* (धागा), *ताल* (दृश्य और प्रदर्शन कला में माप की मानक), *मान* (माप), *लय* (अवशोषण), *शून्य* (रिक्त), और *पूर्ण* (परिपूर्णता) शामिल हैं। एच.एन. चक्रवर्ती, बेत्तिना बौमेर, कपिला वात्स्यायन, बी.एन. सरस्वती, वी.एन. मिश्रा, पी.एल. शर्मा, एस. चट्टोपाध्याय, जी सी. पांडे, सरोजा भट, ए.एन. बलस्लेव, फ्रिट्स स्टाल,

आर. त्रिपाठी, लुईस रॉवेल, ब्रूनो डजेन्स, एस.आर. शर्मा और डी.बी. सेन शर्मा का सहयोग शामिल है।

उसी का संशोधित संस्करण 2003 में प्रकाशित हुआ था।

कलातत्वकोष खंड III, *महाभूत*

इस कार्य के खंड III पर आठ लेख सहित आदि तत्व *महाभूत* का विषय-वस्तु 1996 में प्रकाशित किया गया था। बेत्तिना बौमेर, के.ए. जैकोबसन, पी.एस. फिल्लियोज़ट, एस.सी. चक्रवर्ती, एस. चट्टोपाध्याय, एल.एम. सिंह, फ्रिट्स स्टाल, एस. गुप्ता गोमरिच और पी.एल. शर्मा के सहयोग के द्वारा इस कार्य में 8 शब्द: *प्रकृति, भूत-महाभूत, आकाश, वायु, अग्नि, ज्योतिस/तेजस/प्रकाश, एपी, पृथ्वी/भूमि* शामिल हैं।

ये पहले तीन खंड बेत्तिना बौमेर द्वारा संपादित किये गये थे।

कलातत्वकोष खंड IV, *सृष्टि-विस्तार*

सुकुमार चट्टोपाध्याय और अद्वैतवादिनी कौल द्वारा संपादित कलातत्वकोष का खंड IV 1999 में प्रकाशित किया गया था और फिर भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया। कपिला वात्स्यायन, प्रेम लता शर्मा, सरोजा भाटे, एल.एम. सिंह, सतकारी मुखोपाध्याय, आर.एस. भट्टाचार्य, एस. चट्टोपाध्याय, एच.एन. चक्रवर्ती, एस.के. लाल, रत्न बसु और संघमित्रा बसु के सहयोग से इस पुस्तक में सात लेख - *इंन्द्रिय, द्रव्य, धातु, गुण/दोष, अधिभूत/अधिदैव/ अध्यात्म, स्थूल/सूक्ष्म/पारा और सृष्टि/स्थिति/संहार* शामिल हैं।

कलातत्वकोष खंड V, *आकार-आकृति*

प्रो आर. सी. शर्मा द्वारा संपादित *आकार-आकृति* नामक कलातत्वकोष का खंड V वी 2002 में प्रकाशित किया गया था। बेत्तिना बौमेर, आर. एन. मिश्रा, वी.एन. मिश्रा, पी.के. अग्रवाल, स्वर्गीय प्रेम लता शर्मा, आर.सी. शर्मा, आर. नागास्वामी और कृष्ण देव के सहयोग से दस लेखों *रेखा, आकार-आकृति, रूप-प्रतिरूप, सकल-निष्कल, अर्क, मूर्ति, प्रतिमा-प्रतिकृति, विगृह, बंध-प्रबंध और प्रसाद* सहित दृश्य कला आकारों के विभिन्न रूपों पर प्रकाश डाला गया है।

कलातत्वकोष खंड VI, *आभास*

समान श्रृंखला शीर्षक *आभास* का खंड VI पिछले संस्करण (खंड V) का एक पूरक खंड है जिसमें प्रतीकात्मक रूपों के सार का वर्णन किया गया है। पी. के. अग्रवाल, स्वर्गीय विद्या निवास मिश्र, अनामिका रॉय, पुष्पा तिवारी, राधवल्लभ त्रिपाठी, एस. चट्टोपाध्याय, बिश्वनाथ भट्टाचार्य और एन. सी. पांडा के सहयोग से इसमें *आभास, सदृश्य-स्वरूप, अनुकरण/अनुकृति/अनुकीर्तन, छाया, बिम्ब-प्रतिबिम्ब, लिंग, पद और वृत्ति-रिति* शामिल हैं। यह इ.गाँ.रा.क.के., वाराणसी के दो रिसर्च अधिकारी एस. के. चट्टोपाध्याय और एन.सी. पांडा द्वारा संपादित है। खंड प्रेस में है और बहुत जल्द ही प्रकाशित किया जाएगा।

कलातत्वकोष खंड-VII, *आयतन*

कलातत्वकोष खंड-VII *आयतन* की विषय-वस्तु का वर्णन किया गया है। इस खंड में मुख्य शीर्षक के अन्तर्गत आधार से संबंधित सत्रह अवधारणाएं जैसे- *कुंड, कोण/अश्र/वृत्त, गर्भ, चिति-चैत्य-स्तूप, तीरथ, पीठ, प्रस्तार, मंडप, मंडल, यंत्र यूप, योनि, रथ, वेदी-वेदिका-स्थंडिला, संस्थान-सन्नीवेश, स्तंभ-स्कंभ और स्थान-आयतन* शामिल हैं।

कलातत्वकोष खंड-VIII, *प्रतीक-अभिप्राय*

कलातत्वकोष का खंड-VIII *प्रतीक-अभिप्राय* की विषय-वस्तु पर प्रकाश डालने के लिए प्रस्तावित है जिसमें बीस लेखों *अभिप्राय, कलश-कुंभ, कीर्तिमुख, गवाक्श, त्रिरत्न रत्न, ध्वज, नंदयावर्त, पदम-कमल, प्रतिका, मकर-मीना, मंगल, मिथुन, लता, वृक्ष वयाल/इहामृग, शंख, शालभंजिका, श्रीवत्स, स्वास्तिक और हंस* के साथ अपेक्षित है।

कलातत्वकोष खंड IX, *कला-शिल्प*

कलातत्वकोष खंड IX में *कला-शिल्प* के विषय का वर्णन करने का प्रस्ताव है - बारह शब्दों *अलंकार, आयुध/आयुध-पुरुष, कला, चित्र-चित्रकार, पंक्ति-अवली-माला, पत्र-रचना, प्रमाण, रचना-आलेखन, वास्तु, बहुमुख-बहुभुजा और स्थापति-स्थापत्य* सहित।

कलातत्वकोष खंड X, *नाट्य-संगीत*

कलातत्वकोष खंड X में *नाट्य-संगीत* के विषय पर ध्यान केन्द्रित किया जाना है- जिसमें *संगीत-गान-गीत, मार्ग-देशी, राग-अनुराग-रागिनी (चित्र, नृत्य और सामान्य 3 भागों में),*

वाद्य-आटोद्य नृत्य/नृत्त, मुद्रा, हस्त, कर्ण-अंगहार, अभिनय-नाट्य, आसन, नायक-नायिका, संकेत, भाव-विभाव-अनुभाव आदि शब्दों को शामिल करना चाहते हैं।

कलातत्वकोष खंड XI, *रस-सौंदर्य*

कलातत्वकोष खंड XI में *रस-सौंदर्य* विषय को उजागर करने का प्रस्ताव है -तथा उन अवधारणाओं अर्थात *रस, सौंदर्य-लावण्य, ललिता-लालित्य, रम-रमणीय, चारू-चारुता, माधुर-माधुर्य, प्रसाद, शोभा, उद्धत-सुकुमार, चमत्कार-चमत्कृति, रूचि, लीला-क्रीड़ा, साधारणी-करण और सहृदय-रसिका-भावक* को शामिल करने के लिए इच्छुक है।

कलातत्वकोष खंड XII, *वाक*

कलातत्वकोष खंड XII में *वाक* विषय पर ध्यान केंद्रित करने की संभावना है - और यह अवधारणाओं अर्थात *वाक, स्फोट, नाद, ध्वनि, स्वर-व्यंजन, वर्ण-मालिनी-मात्रका, पाद, शब्द, अर्थ, साहित-साहित्य, वाक्य, मंत्र, चंदास-मंत्र, आख्यान, काव्य, प्रतिभा और विमर्श* को शामिल करना चाहता है।

कलातत्वकोष खंड XIII, *चित्तभूमि*

कलातत्वकोष खंड XIII में *चित्तभूमि* विषय को शामिल करने की संभावना है -जिसमें अवधारणाओं अर्थात *मानस, चित्त, बुद्धि-धी-प्रज्ञ, अहंकार, हृदय, वासना-तृष्णा, काम, सुख-दुख, श्रद्धा, शान्ती, योग, ध्यान, समाधि और भक्ति* का वर्णन करने की संभावना है।

कलातत्वकोष खंड XIV, *ज्ञान तत्व*

कलातत्वकोष खंड XIV में *ज्ञान तत्व* के विषय पर ध्यान केंद्रित करने की संभावना है - जिसमें शब्द अर्थात *चित-चैतन्य ज्ञान-विज्ञान, विद्या, शस्त्र, तत्व, दर्शन, अवधान, विषय, नाम सर्वरूप-स्वभाव, प्रमाण, प्रतीति-अनुमति* आदि का वर्णन करने का प्रस्ताव है।

कलातत्वकोष खंड XV, *यज्ञ-उपासना*

कलातत्वकोष खंड XV में *यज्ञ-उपासना* करने के विषय को उजागर करने का प्रस्ताव किया गया है और *यज्ञ, पूजा-उपासना-सपरया, उत्सव, वर्त, उपकार, दीक्षा, विनियोग, संस्कार-संस्कृति, न्यासा, आसन, साधना/तप सिद्धि-विभूति, दृष्ट-अदृष्ट आदि* अवधारणाओं को शामिल करने की संभावना है।